AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume: 3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

द्वाराहाट क्षेत्र के प्रमुख मंदिरों का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ0 नीरज रूबाली
इतिहास विभाग।
एम0बी0पी0जी0 कालेज
हल्द्वानी।

घनानंद
इतिहास विभाग।
एम0बी0पी0जी0 कालेज
हल्द्वानी।

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES,THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNALWEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume: 3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

प्रस्तावना

द्वाराहाट उत्तराखंड में स्थित एक छोटा सा कस्बा है। वर्तमान में कुमाऊं कमिश्नरी के अल्मोड़ा जनपद में द्वाराहाट स्थित है। द्वाराहाट के चारों ओर का परिदृश्य बेहद मनोरम है। यह हिमालय क्षेत्र में स्थित लघु हिमालय क्षेत्र के अंतर्गत आता है। कुमाऊ का उत्तरी भाग एवं शिवालिक क्षेत्र के मध्य स्थित भाग लघु हिमालय कहलाता है। द्वाराहाट भी इसी हिमालय क्षेत्र में स्थित है। द्वाराहाट के उत्तर में दूनागिरी की चोटी है। यहां पर माता भगवती का शक्तिपीठ द्रोणागिरी मंदिर स्थित है। इस मंदिर का अध्ययन हम आगे आने वाले अध्याय में विस्तार से करेंगे। इसके उत्तर पश्चिम में गेवाड़ घाटी अथवा रामगंगा नदी घाटी स्थित है। इसी रामगंगा नदी के किनारे चौखुटिया, मासी, भिकियासेन आदि स्थल है, जो ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। द्वाराहाट क्षेत्र की सभ्यता काफी प्राचीन है। कई विद्वानों का मत है कि इस क्षेत्र में मानव बस्ती का विकास प्रागैतिहासिक काल से शुरू हो चुका था। वैसे तो कुमाऊं के विभिन्न स्थलों से प्रागैतिहासिक स्थल खोजे जा चुके हैं। द्वाराहाट क्षेत्र के पास ही रामगंगा नदी घाटी चौखुटिया, गगास नदी घाटी क्षेत्र बग्वालीपोखर तथा गोचर के आसपास के क्षेत्रों से प्रागैतिहासिक 'कपमार्क्स' तथा मृदभांड प्राप्त हो चुके हैं। कुमाऊं में विभिन्न स्थानों से प्राप्त धंसाव अथवा 'कप मार्क्स' निपुण कारीगरों द्वारा तराशे गए प्रतीत होते हैं, जो द्वाराहाट क्षेत्र में जालली, बग्वालीपोखर, मिराई, विमाण्डेश्वर आदि स्थलों से भी प्राप्त किए जा चुके हैं।

द्वाराहाट क्षेत्र के आसपास के गांवों के नाम तथा स्थानों से ऐसा अनुमान व्यक्त किया जाता है कि यह क्षेत्र ऐतिहासिक काल में उत्तर वैदिक

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume: 3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

युगीन सभ्यता का केंद्र भी रहा होगा। माहेश्वर प्रसाद जोशी के मतानुसार उत्तर वैदिक काल में जब कुरु महाजनपद के लोग कुरुक्षेत्र में रहते थे तो कुछ लोग आपसी संघर्ष तथा आबादी के दबाव के कारण नए स्थलों की खोज में उत्तराखंड की तरफ आए होंगे, जोशी ने कुरुओं के इस नए क्षेत्र की पहचान बद्री केदार क्षेत्र के रूप में की है। द्वाराहाट के आस-पास के गांव किरोली, कुकुछीना, कुई, कुवाली जैसे नाम कुमाऊं क्षेत्र में अन्यत्र प्राप्त क्वीराली, कौरव छीना, क्वेरला, कोरीछीना नामों के सादृश्य ही जान पड़ते हैं। जोशी इन स्थानीय नामों को कुरूजनों के आवास से संबन्ध करते हैं। संपूर्ण कुमाऊं में स्थानीय भाषा कुमाऊंनी ही बोली जाती है। कुमाऊं के विभिन्न परगनों तथा घाटी क्षेत्रों में स्थानीय भाषा कुमाऊंनी की अलग-अलग बोलियां प्रचलित हैं। द्वाराहाट क्षेत्र की बोली बाकी परगनों की बोलियों से थोड़ा भिन्न है, भाषा के संदर्भ में द्वाराहाट क्षेत्र की बोली भी कुमाऊंनी ही है। इस क्षेत्र में हिंदी भी साधारणतया बोली जाती है किंतु आम बोलचाल की भाषा कुमाऊंनी है।

द्वाराहाट में तीन वर्ग के मन्दिर हैं—कचहरी, मनियाल तथा रत्नदेव। इसके अतिरिक्त बहुत से मन्दिर प्रतिमाविहीन हैं। द्वाराहाट में मां दूनागिरी, विभांडेश्वर, मृत्युंजय और गूजरदेव का मन्दिर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। ऐतिहासिक तथा पुरातात्विक दृष्टि से द्वाराहाट के मंदिरों का विशेष महत्व है। यह अधिकांश मंदिर रेखा शेखर युक्त हैं। बहुकोणीय मंदिर, मिश्रण शैली तथा पंचेश्वर प्रकार के हैं। हम अलग-अलग मंदिर समूहों का पुरातत्व तथा शैली अलग-अलग प्रकार से अध्ययन कर सकते हैं। सर्वप्रथम हम सात मंदिर समूह को देखते हैं जो पुरातत्व विभाग के अंतर्गत आते हैं।

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume: 3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

गूजर देव मंदिर:- "अल्मोड़ा जनपद का पुरातत्व" मदन मोहन जोशी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि गूजर देव मंदिर मध्य भारत तथा गुजरात के बहुकोणीय मंदिरों से मिलता-जुलता है। इसकी पीठ पूर्णतया विकसित है जो क्रमशः दो भित्त पट्टिकाओं, जाड्यकुंभ कर्णक, अंतरपत्र, छाद्यकी, ग्रासपट्टी, गजपीठ तथा नटपीठ से मिलकर बनी है। मंदिर का वेदीबंध-कुंभ, कलश, अंतरपत्र तथा कपोत पाली से निर्मित है। कुंभ में उद्गम युक्त रथिकाओं के भीतर दैवी-आकृतियां उत्कीर्ण मिलती हैं। रथिकाओं के बीच में भी अनुचरों का अंकन मिलता है। मंडोवर के जंघा भाग में भी रथिकाओं के अंदर दैवी-आकृतियां और अप्सराओं का अंकन मिलता है। जंघा के ऊपर उठाए गए वर्तमान में उपलब्ध क्षतिग्रस्त भाग के आधार पर जोशी मानते हैं कि मूल रूप से जंघा के ऊपर कपोत पाली अंतरपत्र एवं खुरछाद्य के ऊपर श्रंग एवं उरःश्रंग का प्रावधान रहा होगा। आंतरिक तल छंद जो वर्तमान में नष्ट हो चुका है उसके अवशिष्ट साक्ष्यों के आधार पर जोशी का यह कहना है कि इस मंदिर का गर्भगृह एवं मुखमंडप चतुर्भुजाकार थे। रंगमंडप पर वर्गाकार था जिसमें भद्रावलोकन बनाए गए थे। मंदिर का संपूर्ण भाग अलंकृत था। जोशी (1994:48-49)

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume: 3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

मनियाल मंदिर समूह:- इस मंदिर समूह में कुल 7 मंदिर हैं। इस मंदिर में अधिकांश मंदिर तलछंद योजना की दृष्टि से गर्भ-गृह अंतराल तथा अर्ध मंडप युक्त हैं। इन मंदिरों में यद्यपि प्रतिमा स्थापित करने के लिए मचिका बनी है लेकिन अब किसी भी मंदिर में प्रतिमा विद्यमान नहीं है। उर्ध्वछंद योजना की दृष्टि से यह सभी मंदिर अधिष्ठान जंघा और रेखा शेखर युक्त हैं। मनियाल मंदिर समूह में महावीर की मूर्ति अलंकृत की गई है।

कचहरी देवालय:- मनियार मंदिर समूह से कुछ ही दूरी पर गांव के मध्य यह मंदिर समूह विद्यमान है। कचहरी मंदिर समूह में दस मंदिर विद्यमान हैं। कुछ

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume: 3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

मंदिरों के सामने बरामदा भी है। यहां भी अधिकांश मंदिरों से मूर्तियां हटा दी गई हैं अथवा लुप्त हैं। इन मंदिरों में तलछंद योजना एक समान है। इसमें गर्भगृह अंतराल और अर्ध मंडप का समावेश है। स्तंभों युक्त मंदिरों की यह शैली रोचक प्रकार के नाम से जानी जाती है। द्वाराहाट में स्थित बद्रीनाथ, केदारनाथ से प्राप्त मूर्तियों को देखकर और उनमें से कुछ में अंकित तिथि से इनके निर्माण काल को 11 वीं शताब्दी का बताया जाता है।

रतन देव मंदिर:- इसमें कुल मंदिर नौ हैं। इनके स्थान तथा मंदिरों के अध्ययन से पता चलता है कि अधिकांशतः ये मंदिर सही स्थिति में हैं। तीन मंदिर चबूतरे पर बने हैं। उत्तराभिमुख दो मंदिरों के गर्भ-गृह का वितान टूटा हुआ है। अन्य सभी मंदिरों के गर्भ ग्रहों का वितान अलंकृत है। रतन देव मंदिर परिसर में पाषाण स्तंभ देखा गया है यह पाषाण स्तंभ मूर्तियों से अलंकृत है जिनमें से एक मूर्ति महावीर की समाधि अवस्था की जान पड़ती है। मेरे गाइड श्री राजेंद्र पुरी ने मुझे बताया कि पाषाण स्तंभ गूजर देव मंदिर का है। इस पाषाण स्तंभ के अतिरिक्त मंदिर समूह में कोई भी मूर्ति नहीं है। तलछंद योजना की दृष्टि से अर्धमंडप रोचक प्रकार के हैं। उर्ध्वछंद योजना में मंदिर खुर, कुंभ, कलश तथा कपोत पट्टियों से अलंकृत हैं। अधिष्ठान साधा जंघा भाग तीरथ रेखा शेखर युक्त हैं। इस मंदिर में कोई भी मूर्ति नहीं है।

बद्रीनाथ मंदिर:- इस मंदिर के तलछंद योजना में गर्भगृह अंतराल तथा परवर्ती मंडप युक्त उर्ध्वछंद योजना में जगती, अधिष्ठान उसके ऊपर जंघा भाग में अलंकृत उद्गम युक्त रथिकाऐं प्रतिमाविहीन हैं। जंघा भाग के ऊपर अलंकृत कपोल पट्टियां हैं जिनके ऊपर छाद्य एवं अंतरपत्र हैं। शिखर पाँच भूमि आमलकों से सुशोभित है। शिखर के ऊपर चंद्रिका तथा शिखर आमलक स्थापित

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume: 3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

हैं। गर्भ गृह का प्रवेश द्वार सादा है जिसके ललाट पर चतुर्भुजी प्रतिमा स्थापित है। वर्तमान में इस मंदिर में पूजा-अर्चना होती है।

बद्रीनाथ मंदिर के मुख्य मंदिर के गर्भगृह में भगवान विष्णु की मूर्ति स्थापित है। देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि यह मूर्ति कत्यूरी काल की न होकर उसके बाद स्थापित की गयी होगी। मूर्ति स्थापित स्थान के चारों ओर विभिन्न प्रकार की मूर्तियां अलंकृत हैं जिनमें से कुछ समाधि में रत हैं। कुछ देवी प्रतिमाएं हैं। पश्चपाद पर खड़े घोड़े के भी दर्शन इन मूर्तियों में होते हैं। गणेश जी की मूर्तियां भी दीवारों पर उकेरी गई हैं। कुछ मूर्तियों की तुलना गूजर देव मंदिर से प्राप्त मूर्तियों से की जा सकती है।

मृत्युंजय मंदिर:- उचित रखरखाव के अभाव में इस मंदिर की स्थिति ज्यादा ठीक नहीं है। तलछंद योजना की दृष्टि से मृत्युंजय मंदिर के गर्भ-गृह, अंतराल तथा मंडप सभी वर्गाकार हैं। उर्ध्वछंद योजना में मंदिर की जगह तथा अधिष्ठान का कुछ भाग जमीन के अंदर धसा हुआ है। मंदिर त्रिरथ विन्यास युक्त है तथा साधा है। मंदिर का शिखर नागर शैली का तथा त्रिरथ रेखा शिखर है। गर्भ गृह में शिवलिंग स्थापित है। इस मंदिर में विधिवत पूजा होती है। इसके प्रांगण में भगवान भैरव नाथ का मंदिर भी है। यह मंदिर द्वाराहाट-बद्रीनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग के पास ही स्थित है। मंदिर परिसर में कई अन्य मंदिरों के छत्र पड़े हैं जो मंदिर अब नहीं बचे हैं, यह छत्र उन्हीं मंदिरों के जान पड़ते हैं।

वनदेव मंदिर:- उपरोक्त वर्णित सभी छह मंदिरों के समूहों के अतिरिक्त भारतीय पुरातत्व विभाग के अंतर्गत एक और मंदिर है जो वनदेव मंदिर के नाम से जाना जाता है। यह मंदिर रानीखेत-बद्रीनाथ मुख्य मोटर मार्ग के पूर्व में

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume: 3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

स्थापित है। मंदिर की निर्माण शैली तथा बनावट उपरोक्त वर्णित अन्य सभी मंदिर समूह के सादृश्य ही जान पड़ती है। यहां किसी भी तरह का अलंकरण नहीं है। मंदिर के गर्भ गृह में कोई मूर्ति स्थापित नहीं है। मंदिर के मुख्य भाग में बाहर की तरफ से एक मूर्ति के दर्शन होते हैं। यह एकल मंदिर है।

केदारनाथ मंदिर:- यह मंदिर वर्तमान में द्वाराहाट तहसील के पास स्थित है। मुख्य मंदिर की बनावट गढ़वाल में स्थित द्वादश शिवलिंग में से एक केदारनाथ मंदिर के समान है। अतः इस मंदिर को भी केदारनाथ मंदिर कहते हैं। इसका शिखर लकड़ी का बना है। इस मंदिर के बाहरी भाग में माँ भगवती, शिवलिंग और गणेश की प्रतिमा स्थापित है। इन्हीं प्रतिमाओं के मध्य एक दुर्लभ प्रतिमा विद्यमान है। पुरातत्व वेत्ताओं के अनुसार यह ब्रह्मा, विष्णु, महेश की मूर्ति है। मंदिर के अंदर गणेश व शिवजी की आसन लगाए मूर्तियां स्थापित हैं। मंदिर में नियमित पूजा होती है। मंदिर के मुख्य पुजारी महेश गिरी जी महाराज के अनुसार अब यहां उतनी भीड़ नहीं होती है जितनी पहले हुआ करती थी। इसका कारण बताते हुए कहते हैं कि क्षेत्र से लोगों का पलायन, युवाओं में बढ़ती नशे की लत, महिलाओं का काम-काजी होना प्रमुख कारण है।

दूनागिरी का मंदिर:- यहां पर माता दुर्गा वैष्णवी रूप में पूजी जाती है। मानस खंड के द्रोणाद्रि महात्म्य नामक संपूर्ण अध्याय में कहा गया है कि द्रोणागिरी कौशिकी अर्थात कोशी और रथ वाहिनी अर्थात रामगंगा नदियों के मध्य स्थित है। श्रीमद्भागवत में इसे सरित शैल कहा गया है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume: 3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

सोलवीं सदी में कत्यूरी राजाओं ने मां वैष्णवी के सम्मान में इस पर्वत की चोटी पर मंदिर स्थापित किया। मंदिर के भीतर कांसे की अनूठी प्लेट है। प्लेट का निर्माण सन् 1181 ईस्वी में हुआ था। कुमाऊं के शक्ति मंदिरों में यह अत्यंत प्राचीन और ऐतिहासिक शक्तिपीठ है। कत्यूरी वंश के राजा इस के उपासक थे। कत्यूरी कालीन विभिन्न मंदिरों में जिस मूर्तिकला के दर्शन होते हैं वैसी ही कलाकृति दूनागिरी मंदिर में भी मौजूद है। रामदत्त त्रिपाठी के अनुसार शक संवत् 1238 अर्थात ईसवी सन् 1318 में कत्यूरी वंश के राजा सुधार देव ने दूनागिरी पर्वत में देवी की मूर्ति स्थापित की थी। हिमालयन गजेटियर में यहां शक संवत् 1103 ईस्वी सन् 1181 के प्राचीन शिलालेख का उल्लेख मिलता है।

विमाण्डेश्वर का मंदिर:- यह मंदिर क्षेत्र में शिव जी का अति प्राचीन मंदिर है। इसका उल्लेख महर्षि वेदव्यास ने किया है। (श्री 108 महात्मा लक्ष्मी नारायण दास विमाण्डेश्वर महात्म्य अध्याय 4 श्लोक 11- 14)

स्कंद पुराण के अनुसार विवाह के उपरांत शिव ने संगम की इच्छा प्रकट की। उस समय हिमालय के शिखरों पर सिर को, नील पर्वत पर कटि, दारूका वन में चरण, और नागार्जुन पर्वत पर दाहिना हाथ तथा भुवनेश्वर पर्वत पर बायां हाथ रखा। नागार्जुन पर्वत से ही सुरभि नदी निकलती है जो द्रोणाचल पर्वत से निकलने वाली नंदिनी नदी के साथ विमाण्डेश्वर में संगम का निर्माण करती है। विमाण्डेश्वर मंदिर का निर्माण संभवतः साके 376 अर्थात ईसवी सन् 311 में हुआ था। यह मंदिर मिश्रक शैली का बना है। इसका भद्र लतिन एवन कर्ण फांसना शैली का बना है। विमांडेश्वर क्षेत्र को उत्तर की काशी के नाम से भी जाना जाता है। द्वाराहाट के दक्षिण में ही चंडेश्वर महादेव का मंदिर स्थित है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume: 3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

स्रोत–

१. कुमाऊं का इतिहास:- पं॰ बद्रीदत्त पांडे
२. अल्मोड़ा जनपद का पुरातत्व:- मदन मोहन जोशी
३. कत्यूरी शासनकाल में उत्तराखंड की प्रशासनिक, संस्कृति एवं आर्थिक स्थिति एक अध्ययन:- राजेश कुमार सिंह डसीला
४. कुमाऊं में सांस्कृतिक पर्यटन द्वाराहाट, देवीधुरा व पूर्णागिरि के विशेष संदर्भ में:- वीरेंद्र पाल
५. पहाड़ 7 "कत्यूरी भूमि की यात्रा":- राहुल सांकृत्यायन
६. उत्तरांचल हिमालय समाज, संस्कृति, इतिहास एवं पुरातत्व:- माहेश्वर प्रसाद जोशी, कुमारी ललित प्रभा जोशी
७. उत्तराखंड इतिहास और संस्कृति:- चंद्रशेखर दुम्का, घनश्याम जोशी
८. कुमाऊं का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास (11 वीं से 18 वीं शताब्दी ईस्वी):- डॉ॰ विद्याधर सिंह नेगी
९. उत्तराखंड समग्र अध्ययन:- सविता मोहन
१०. उत्तराखंड में गौरवशाली कत्यूरी राजवंश का समग्र अध्ययन पृष्ठ 203:- बलवंत सिंह
११. साक्षात्कार-हेमचंद्र कबड्वाल, प्रवक्ता गणित द्वाराहाट इंटर कॉलेज
१२. साक्षात्कार-महेश गिरी, मुख्य पुजारी, केदारनाथ मंदिर, द्वाराहाट
१३. Dwarahat Wikipedia

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue.For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date.If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible.With my whole responsibility

ISSN: 2320-3714
Volume: 3 Issue: 3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject Humanities

legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine.If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification / Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright / Patent/ Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues.I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisherthenmy paper may be rejected or removed from the websiteanytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declarethatifpublisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

डॉ0 उमा काण्डपाल
डॉ0 नीरज रुवाली

*****